श्री जानकी स्तुति श्लोक संग्रह

Sri Janaki Stuti Shloka Sangraha

A Compilation of Devotional Verses in Praise of Mata Sita

श्रीजानकी ध्यानम्

कौशेय पीतवसनामरविन्द नेत्रां
रामप्रियाभयवरोद्यत पद्महस्ताम्।
उद्यच्छतार्क सदृशीं परमासनस्था
ध्यायेद्विदेहतनयां सखिभिः सहस्रैः॥

सुन्दर रेशमी पीताम्बर धारण किये हुए, कमल के समान सुन्दर नेत्रवालीं, अभय वरदान देने के लिये सर्वदा उद्यत रहनेवालीं, अपने सुकोमल कर में कमल धारण किये, उदय होते हुये दिवाकर की भांति ज्योतिर्मय दिव्य सिंहासन पर विराजमान, हज़ारों सखियों द्वारा सुसेवित श्री श्रीविदेहराजकुमारी जी का प्रेमपूर्वक ध्यान करें॥

स्वर्णाभामम्बुज करां रामालोकन तत्पराम्।
ध्यायेत्षटकोण मध्यस्थां रामाङ्कोपरि शोभिताम॥

स्वर्ण की भांति दिव्य देह वालीं, श्रीरघुनन्दन आनन्दकन्द की छटा का अवलोकन करने में निमग्न, श्रीप्रियतमजू के वामाङ्क में सुशोभित, षटकोण मध्यस्थ विराजमान, श्रीरामप्रियाजू का प्रेमपूर्वक ध्यान करें॥

श्रीजानकी जी की ध्यान संयुक्त वन्दना

रामां राजीवनयनां रामवक्षस्थ लालिताम्।
रामाङ्कपीठे राजन्तीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम्॥

अतिरमणीय, राजीवदललोचना श्रीरामभद्रजू के हृदय स्थल में पूर्ण प्रेम से लालित, श्रीरामजी के अंक पीठ (गोद) में विराजमान श्री रामवल्लभाजू की मैं वन्दना करता हूँ॥

विदेहतनयां देवीं मन्दस्मित मुखाम्बुजाम्।
इन्दीवर विशालाक्षीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम्॥

श्रीविदेहराजकुमारी, मन्द मन्द हास्यपूर्ण मुखारविन्द वाली, कमल दल के समान विशाल लोचन वाली देवी श्रीरामकान्ता श्रीकिशोरी जी की मैं प्रेम पूर्वक वन्दना करता हूँ॥

दिव्यमाल्याम्बरधरां तप्तचामीकरप्रभाम्।
चारु चन्द्राभ वदनीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम्॥

दिव्य (कभी मलिन न होने वाले) सुन्दराति सुन्दर वस्त्र भूषण तथा मालादि धारण करने वालीं, तपाये हुये हेम (सोने) के समान चमकती हुई कान्ति (प्रकाश) से पूर्ण, शरद ऋतु के

पूर्ण चन्द्र के समान शोभा सम्पन्न मुखवाली श्रीअवधेशराजकुमार की प्राणवल्लभा श्रीरामप्रियाजू की मैं वन्दना करता हूं ॥

पद्मासनां पद्महस्तां पद्मपत्र निभेक्षणाम् ।
पद्मालयां पद्मगन्धां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥

कमल के सुन्दर आसन पर विराजमान, कमल पुष्प को हाथ में धारण किये हुये, खिले हुये कमलदल के समान सुन्दर नयन वालीं, कमल के पुष्पों से बनाए हुये कुञ्जों में निवास करनेवालीं, कमल के फूलों की सुन्दर सुगन्ध जिनके श्री अङ्ग से सदा ही निकलती है, ऐसी श्रीराघवेन्द्रजू की प्राणवल्लभाजू की मैं वन्दना करता हूँ ॥

हेमपद्म समासीनां नील कुञ्चितमूर्धजाम् ।
तरुणादित्यसङ्काशां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥

सुवर्ण के पद्मासन पर विराजमान, काले घुंघराले सुचिक्कन सुन्दर केशवालीं, तरुण आदित्य (सूर्य के समान) दिव्य प्रकाशित शरीरवालीं श्रीसाकेतराजवल्लभाजू की मैं वन्दना करता हूँ ॥

विद्युत्पुञ्ज प्रभाभासां सुरासुर नमस्कृताम् ।
त्रयीमयीं सूक्ष्मरूपां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥

बिजली के पुञ्ज (समूह) के समान प्रभावाली, सभी सुर-असुरादि प्राणिमात्र द्वारा वन्दित, वेद प्रतिपादित ब्रह्म-विद्या स्वरूपिणी, अत्यन्त सूक्ष्म रूप से सर्वत्र स्वशक्ति द्वारा व्यापक, श्री साकेताधीश्वरजू की हृदयवल्लभाजू की मै वन्दना करता हूँ ॥

चन्द्रमण्डल मध्यस्थां चन्द्र बिम्बोपमाननाम् ।
चन्द्रकोटि प्रभां देवीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥

चन्द्र के आकार के सुन्दर सिंहासन के मध्य में विराजमान चन्द्रबिम्ब के समान गोल सुन्दर मुखवालीं, करोड़ों चद्रमा के प्रभा को लज्जित करनेवालीं, गौर सुन्दरी देवी श्रीरामवल्लभाजू की मैं वन्दना करता हूं ॥

आदिमध्यान्तरहितामम्भोरुह निवासिनीम् ।
नाद ब्रह्ममयीं देवीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥

आदि, मध्य और अन्त से रहित, कमल कुञ्ज में निवास करने वालीं, नाद ब्रह्ममयी देवी, श्रीदशरथराजकुमारजू की प्राणप्रियाजू की मैं वन्दना करता हूं ॥

यक्ष किन्नर गन्धर्व सिद्ध विद्याधरैः सदा ।
सेव्यमान पदाम्भोजां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥

यक्ष-किन्नर-गन्धर्व-सिद्ध-विद्याधर आदि भक्तों से जिनके चरणकमल सदा सुसेवित रहते हैं, ऐसी श्रीविदेहराजकुमारीजू की मैं वन्दना करता हूं ॥

ब्रह्मेन्द्र वन्दित पदां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणीम्।
परानन्दमयीं रम्यां वन्दे श्रीरामवल्लभाम्॥

ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्रादि देवगणों से आराधित जिनके चरण सरोरुह हैं, सृष्टि की उत्पत्ति, पालन, प्रलयादि कार्य जिनकी इच्छा मात्र से ही सुसम्पन्न हो जाते हैं, ऐसी परमानन्द परिपूर्ण परमरमणीय श्रीकौशलकुमारजू की प्राणवल्लभाजू की मैं सदैव वन्दना करता हूँ॥

श्रीजानकी शरणागति पञ्चकम्

कृपारूपिणि कल्याणि राम प्रेयसि जानकि।
कारुण्यपूर्णनयने दया दृष्ट्या विलोकय॥

हे कृपा स्वरूपणि ! कृपा रस से ही जिनकी प्रतिमा परिपूर्ण है, ऐसी हे कल्याण मूर्त्ति ! चेतनों का परम कल्याण करने की कामना से अपार दयापूर्ण हृदय जिनका है ऐसी हे श्रीराघवेन्द्रजू की प्राण प्रियतमा, श्रीजनकनन्दनी जू ! एक बार उस अपार-करुणा-दया-कृपा-अनुकम्पा-वात्सल्यादि गुणगणों से छलकते हुये नवीन कमल के समान सुन्दर नयनों के कृपा कटाक्ष द्वारा मेरी ओर निहार कर इस दीन को कतार्थ कीजिए।

सर्वलोकशरण्ये श्रीसीते वात्सल्य सागरे।
मातर्मैथिलि सौलभ्ये रक्ष मां शरणागतम्॥

समस्त लोकों के चेतनों को शरण देनेवालीं, शरणागत जीवों का सदैव परमकल्याण करनेवालीं, वात्सल्य रसपूर्ण अपार अगाध महासागर समान उदार हृदयवालीं, अकिञ्चन निस्साधन भक्तजनों को अति सुलभ जगज्जननी, हे श्रीमिथिलेशराजदुलारीजू ! शरण में आये हुये मेरी कृपाकर रक्षा कीजिये॥

कोटि कन्दर्प लावण्यां सौन्दर्यैक स्वरूपिणीम्।
सर्व मङ्गल माङ्गल्यां भूमिजां शरणं व्रजे॥

करोड़ों कामदेव के दर्प को चूर्ण करने वाले अपार रूप लावण्य से सम्पन्न सुन्दरता की एकमात्र अप्रतिम मञ्जुल मधुर मनोहर मूर्ति, समस्त मङ्गलों की खान, महामङ्गल मोद विग्रह श्रीधरणीदेवी की कुमारी होकर लीलाभूमि में प्रकट होने वाली श्री स्वामिनीजू की शरणागति मैं ग्रहण करता हूं॥

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणाम्।
सर्वस्यार्तिं हरणैक सुव्रतां शरणं व्रजे॥

शरण आये हुये आर्त दीनजनों की रक्षा करने में सदैव परायण, सभी जीवों की घोर पीड़ा का हरण करनेवालीं, चेतन का परम कल्याण करने की सुन्दर प्रतिज्ञा रखनेवालीं श्रीविदेहराजललीजू की मैं शरण जाता हूं ॥

सीतां विदेहतनयां रामस्य दयितां शुभाम् ।
हनुमता समाश्वस्तां भूमिजां शरणं व्रजे ॥

श्रीविदेहराजदुलारी, श्रीरघुनन्दन प्राणप्यारी, अति शुभकल्याण करने वाली, श्रीमारुतिकुमारजू द्वारा आश्वासित सुसेवित, भूमिनन्दिनी-श्रीकिशोरीजू की मैं शरण जाता हूँ ॥

अस्मिन्कलिमलाकीर्णे कालेघोरभयार्णवे ।
प्रपन्नानां गतिर्नास्ति श्रीमद्रामप्रियां विना ॥

भय-यातनादिकों से परिपूर्ण इस घोर कलिकाल में भयङ्कर भवसागर से पार जाने के लिए जीवों की अन्य कोई गति नहीं है तथा कहीं आश्रय नहीं है। इस समय शरणागत भक्तजनों के लिए केवल श्रीराघवेन्द्रराज महारानी श्रीकिशोरीजू के सुचारु चरण कमल ही एकमात्र आश्रय हैं ॥

सदानुग्रह सम्पन्ने श्रीमन्त्रैक विग्रहे ।
कोशलेन्द्रप्रिये देवि रक्ष मां जनकात्मजे ॥

सदैव अनुग्रह से परिपूर्ण श्रीमंत्रार्थ की विग्रहवान मूर्ति श्रीकोशलेन्द्र कुमार रघुनन्दनजू की प्राण प्रियतमा देवी हे श्रीजनकराजनन्दिनीजू ! कृपाकर मेरी रक्षा कीजिए ॥

इति शरणागति पञ्चकम् सम्पूर्णम् ॥

साम्राज्यमर्पयति भक्तिलवप्युदग्र
प्रेम्णि प्रदर्शयति पाद सरोज शोभाम् ।
विघ्नान्निवारयति या भजतां समन्तात्
सा जानकी विजयते कुल दैवतं नः ॥

स्वामी हर्याचार्य कृत जानकीगीत मंगलाचरण श्लोक

जिनकी थोड़ी सी भक्ति भी सम्पूर्ण संसार का साम्राज्य समर्पण कर देती है तथा जिनका प्रेमपूर्वक आराधन करने से उनके चरण कमल की दिव्य छटा की सुन्दर शोभा का परम सुख प्राप्त होता है और जो भजन करने वालों के सभी प्रकार के संकट विघ्न भली भांति नष्ट कर देती हैं ऐसी हमारी कुलदेवता श्रीजनकराजकिशोरी जानकी जी की सदा जय हो, विजय हो।

सन्तर्जतोऽपि बहुधा परिपीड़ितोऽपि
सन्ताडितोऽपि च रुषाऽति तिरस्कृतोऽपि ।
दीनोरुदन्नशरणस्तव पादपद्म
युग्मं शरण्यमभितः शरणं करोमि ॥

हे श्री किशोरीजी ! आप मुझे भले ही फटकार दें, अनेक प्रकार की पीड़ा दें, ताड़ना करें, अथवा मुझ पर क्रोध करके मेरा अत्यन्त तिरस्कार करें; तो भी मैं तो दीन हूं अशरण हूं, अतएव रोता हुआ आपके ही सर्वतः शरणागतवत्सल चरण कमलों को अपना शरण (एकमात्र रक्षक आश्रय) बनाता हूं ॥

वन्दनात्प्रणतपापकर्षिणीं सेवनादमृतवर्षवर्षिणीम् ।
संश्रयादखिलदोषमर्षिणीं जानकी चरणरेणुमाश्रये ॥

जो वन्दन करने से शरणागत भक्तों के समस्त पाप हरण कर लेतीं हैं, जिनकी सेवा सदैव अमृतरस बरसाती रहती है, जिनका आश्रय अखिल दोषों एवं दुखों को नष्टकर देता है ऐसी परम कृपालु श्रीकिशोरीजी की चरणरेणु का मैं अवलम्ब ग्रहण करता हूं ॥

श्रीजानकीदण्डकम्

वन्देरामांकनिलयां धृतकरकमलां चारुहासां सुनासां,
चन्द्राभां कम्बुकण्ठीं स्फुरितकचभरां पुष्पकोदण्ड हस्ताम् ।
सर्वालंकारदीप्तां मणिमयमुकुटां दिव्यमालाम्बराढ्यां,
देवीं कर्णांतनयनामाश्रितदुरितहरां रत्नसिंहासनस्थाम् ॥ १ ॥

कमलवत् कर में पुष्प धनुषवत् नाल युक्त लीला कमल को लिये हुये सुन्दर मुस्कुराती हुईं तिल पुष्प के समान सुन्दर नासिका वालीं, विशाल नेत्रों वालीं, चमकते केश एवं चन्द्रमा के समान आह्लादकारिणी शीतल स्वच्छ कान्ति से युक्त शंख के समान कण्ठ वालीं, सखियों के द्वारा सजाये गये समस्त युक्त अलंकारों से शोभित रत्न जटित क्रीट चंद्रिका धारण किये हुये दिव्य माला एवं वस्त्र धारण किये हुये मणिमय सिंहासन पर श्रीरामजी के अङ्कपीठ में विराजमान शरणागतजनों के समस्तभय को मिटाने वालीं श्रीजानकीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ।

वन्दे श्रीरामकान्तां स्तनभरनमितां दिव्यहेमाम्बराढ्यां
नानालंकार युक्तामभयवरकरां पद्म सिंहासनस्थाम्।
योगीन्द्रैर्मुनिमानसाब्जनिलयां ब्रह्मादि संसेवितां
कारुण्यामृतवीक्षणां सुनयनां कल्याण सम्पत्प्रदाम्॥ २॥

चलते समय स्तनों के बोझ से कुछ झुकी सी रहती हैं। स्वर्ण सूत्र द्वारा मणि जटित रेशमी वस्त्र पहने अनेकों आभूषण अङ्ग प्रत्यंग में सजे हैं। आश्रितों को अभय वर देने वाली अभय मुद्रा से अष्ट दल पद्माकार सिंहासन पर सुशोभित हैं। योगीन्द्रों से सेवित एवं मुनियों के हृदय कमल में ध्यानानुरूप विराजित रहने वालीं ब्रह्मा विष्णु आदि से निरंतर सेवित, कृपा रूपी अमृत की धारा बरसाती हुईं सुन्दर नेत्रों से आश्रित जनों की ओर देखती हुईं, जनों को लोक परलोक की परमानन्दमय सम्पत्ति प्रदान करती रहती हैं, ऐसी श्रीरामभद्रजू की परमप्रिया श्रीसीताजी की मैं वन्दना करता हूँ॥ २॥

विद्युद्भासां शुभांगीं विपुलकटितटीं पद्मपत्रायताक्षी-
मुद्यद्रत्न किरीट कुंडलधरां सुस्निग्धमंदस्मिताम्।
विद्यावेद्यमयीं विचिन्त्यविलसद्भूतिप्रदां भासुरां,
ध्याये श्रीरामकांतां हरिहरब्ब्रह्मादिभिस्सेविताम्॥३॥

जिनके समस्त शुभ अङ्गप्रत्यंग विद्युत के समान चमकते हैं, जिनके श्रोणी-नितंब विशाल हैं, कमल की पँखुड़ी के समान जिनके विस्तृत नेत्र हैं, जिन्होंने चमकते हुये मणि जटित किरीट एवं कर्ण भूषण पहने हैं, जो कृपामयी शान्त मन्दमुस्कान वाली हैं, जो ब्रह्मविद्या से वेद्य अर्थात जाने जाने वाले श्रीरामजी में तल्लीन रहने वाली हैं, ब्रह्मा-शिवादि जिस विलास आनन्द का चिन्तवन करते हैं वह आनन्द ऐश्वर्य जो अपने जनों को सदैव प्रदान करती रहती हैं, जो सदा विष्णु, शिव, ब्रह्मा आदि से निरंतर सेवित हैं ऐसी परमकान्तिमती श्रीरामभद्र जू की प्राणप्रिया श्रीसीताजी की मैं वन्दना करता हूँ॥ ३॥

श्रीमच्चन्दन चर्चितोन्नतकुचां साचीतमालाम्बरां
ताटंक द्युति सत्कपोलयुगलां ग्रैवेयकालंकृताम्।
काञ्चीकंकण हंसिका झणझणत्मंजीर पादाम्बुजां
श्रीरामांकगतां सरोरुहकरां देवी भजे जानकीम्॥ ४॥

जिनके ऊपर उठे वक्षस्थल केशर कपूर कस्तूरी आदि मिश्रित मलय चन्दन से चित्रित लिप्त हैं, जो बहुत श्रेष्ठ एवं सुन्दर तमाल के रंग का श्याम वस्त्र धारण किये हैं। जिनके दोनों कपोलों के पास में लटकते हुये कर्णफूल की चमक प्रतिबिम्बित हो रही है, जो कण्ठ के भूषण मोती कण्ठा आदि से शोभित हैं। करधनी, कंकण, पायजेब और नूपुर युक्त बिछुओं की रुन-झुन शब्द से

जिनके चरण कमल शोभित हैं और जो कमल कल कोमल कान्तित करों में लीला कमल लिये हैं ऐसी श्रीरामजी के अङ्कपीठ में सिंहासन पर बैठी हुईं श्रीजानकीदेवी का मैं भजन करता हूँ ॥ ४ ॥

नीलाम्भोजदलाभिरामनयनां नीलाम्बरालंकृतां
गौराङ्गींशरदिन्दुसुन्दरमुखीं विस्फूर्यबिम्बाधराम् ।
कारुण्यामृतवर्षिणीं हरिहरब्रह्मादिभिर्वन्दितां,
ध्याये भक्तजनेप्सितार्थफलदां रामप्रियां जानकीम् ॥ ५ ॥

नील कमलदल के समान सुन्दर नेत्र वालीं, नील वस्त्र धारण किये हुए गौर वर्ण अङ्ग वालीं, शरत्पूर्णिमा के पूर्ण कला विकसित चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखवालीं, खूब पके हुये कुंदरू के फल के समान लाल अधरोष्ठ वालीं, अधम जनों पर कृपा सुधा की वर्षा करने वालीं, विष्णु, शिव, ब्रह्मा आदि सदैव जिनकी वन्दना करते रहते हैं ऐसी भक्त जनों के मनोभिलाषत फल को देने वालीं श्रीरामजी की प्राणप्रिया श्रीजनकराजकिशोरीजू का मैं सदैव ध्यान करता हूँ ॥ ५ ॥

सीतामुत्फुल्लपङ्केरुहकलितकरां राघवस्याङ्कदेशे
राजन्तीं राजराजप्रियनुति विभवां राजबिम्बोपमास्याम् ।
विश्वानन्दकरीं विबुधयुवतिभिः सेव्यमानं समन्ताद्
वैदेहीं भावयेहं हृदयसरसिजे तत्वविज्ञानरूपाम् ॥ ६ ॥

सद्यः खिले लाल कमल के समान सुन्दर जिनके करपल्लव खिले हुये लीला कमल से शोभायमान हैं। श्रीरामजी की गोद में बैठी हुईं उभयविभूति नायक महाराज श्रीरामजी को प्रणाम करना ही जिनका प्रिय ऐश्वर्य है अर्थात् जो सदैव श्रीरामजी को प्रणाम करतीं हैं, जिनके मुखमण्डल की उपमा में कुछ कुछ पूर्णचन्द्र बिम्ब ही आ सकता है। समस्त सृष्टि को आनन्द प्रदान करने वालीं, सेवा करने के लिये देवपत्नियाँ जिन्हें चारों ओर से घेरे खड़ी रहती हैं, योगियों के हृदय कमल में परमतत्व रूप से सदैव भासमान रहने वालीं श्रीविदेहराजनन्दिनी श्रीसीताजी का मैं अपने हृदय कमल में ध्यान करता हूँ ॥ ६ ॥

हेमाभामरविन्दसुन्दरदृशां सौंदर्यसद्वैभवां,
मन्दं मन्दमनोहरस्मितमुखीं मन्दारमालान्विताम् ।
कुन्देन्दीवरपाटलैस्तुरभितां वृन्दारकैर्वन्दितां
वन्दे राघवसुन्दरीं त्रिभुवनानन्दैकदीपांकुराम् ॥ ७ ॥

तपाये हुये जाम्बूनद जातीय स्वर्ण के समान अङ्ग कान्ति वालीं, नील कमल के समान जिनके नेत्रों की पुतलियां हैं, परम श्रेष्ठ शोभावालीं, सुन्दर मुस्कान युक्त मुखवालीं, देव-पारिजात का गजरा पहने हुये, कुन्द, नील कमल और लाल गुलाब इन तीनों पुष्पों की मिश्रित सुगन्ध जैसी होती है उसी तरह की सुगन्ध जिनके श्रीअङ्ग से निकला करती है, देवता लोग जिनकी वन्दना किया करते हैं और जो तीनों भुवन के आनन्द दीप की एकमात्र ज्योति हैं ऐसी श्रीरामभद्रजू की प्राणप्रिया श्रीसीताजी की मैं चतुर्मुख ब्रह्मा वन्दना करता हूँ॥ ७ ॥